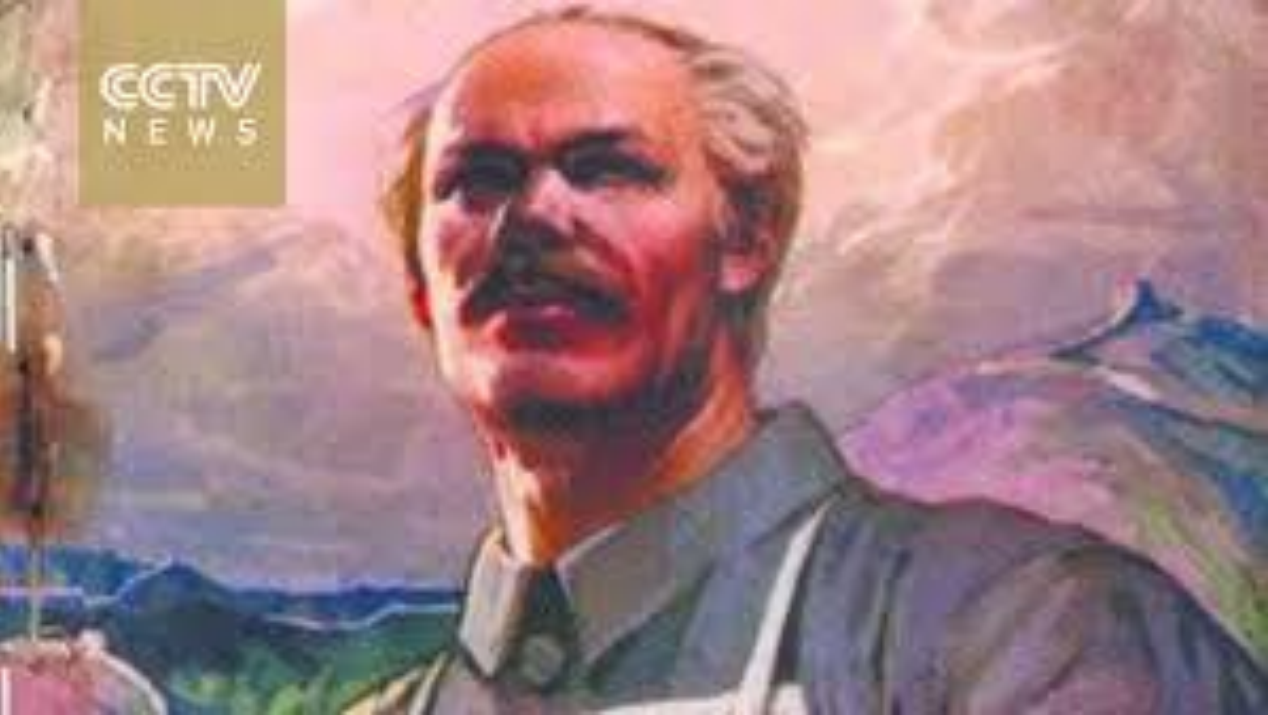


# डॉ. नार्मन बेथयून

एक निस्स्वार्थ डॉक्टर





ऊपर : 1893 में बेथयन परिवार का एक चित्र. नार्मन घोड़े पर बैठा है. उसका छोटा भाई मल्कोल्म और बड़ी बहन जेनेट गाड़ी में बैठे हैं.

बाएं : नार्मन (बीच में) अन्य सॉकर टीम के सदस्यों के साथ 1905.

नीचे : नार्मन बेथयन (बीच में) विक्टोरिया हारबर लम्बर कंपनी 1911 में.



## डॉ. नार्मन बेथयून एक निस्स्वार्थ डॉक्टर

हेनरी नार्मन बेथयून का जन्म गेवनहर्स्ट, ऑंटारियो में 3 मार्च, 1890 को हुआ था. उनके पिता चर्च के पादरी थे. जब भी पिताजी को किसी नए चर्च में जाने का आदेश मिलता तब पूरे परिवार को उनके साथ-साथ जाना पड़ता था.

जब नार्मन तीन साल का हुआ तो परिवार टोरंटो में आकर बस गया. नार्मन बहुत ही जिज्ञासु और स्वतंत्र प्रकृति का बच्चा था. छह साल की उम्र में उसने शहर को खुद अकेले खोजने का मन बनाया. दस साल की उम्र में वो बंदरगाह के पार तैरते हुए मरते-मरते बचा. पर वो उसमें सफल होना चाहता था. इसलिए अगले साल उसने बहुत मेहनत की और अपने लक्ष को पूरा किया. नार्मन जो खतरनाक चीज़ें करता था उससे पिताजी को फ़िक्र होती थी पर उसकी माँ एलिज़ाबेथ एन ने एक बार कहा, "उसे ज़ोखिम उठाना सीखना चाहिए. इसलिए उसकी जो मर्ज़ी चाहे वो करे और उससे सीखे."



फिर बेथयून परिवार का तबादला ओवेन साउंड में हुआ और वहां नार्मन ने हाई-स्कूल की पढ़ाई खत्म की। 1909 में उसने यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरंटो में दाखिला लिया। दो साल बाद उसकी पढ़ाई में विघ्न पड़ा। वो उत्तरी ओंटारियो में एक लकड़ी के कैंप में काम करने चला गया। वो वहां मजदूरी भी करता और पढ़ाता भी था। 1912 में उसने यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरंटो के मेडिकल स्कूल में दाखिला लिया। पर 1914 में जब कनाडा ने प्रथम महायुद्ध में हिस्सा लिया तब उसने मरीजों का स्ट्रेचर उठाने वाली टीम में अपना नाम दर्ज कराया।

बेल्जियम में ग्रेनाड की लड़ाई में नार्मन, एक गोली से बुरी तरह ज़ख्मी हुआ और उसे वहां छह महीने अस्पताल में बिताने पड़े। उसके बाद ही वो कनाडा के अपने मेडिकल स्कूल में वापिस लौट सका। दिसम्बर 1916 में उसने, डॉक्टरी की पढ़ाई समाप्त की। वो दुबारा फौज में भर्ती हो गया। उसने ब्रिटिश नौ-सेना में एक सर्जन, और कनाडा की वायु-सेना में मेडिकल ऑफिसर की हैसियत से काम किया।

बेथयून (आखरी पंक्ति में, बाएं से तीसरा) ग्रेट ओरमोंड  
हॉस्पिटल फॉर चिल्ड्रेन, लन्दन, इंग्लैंड, 1919 में.



रॉयल कॉलेज ऑफ़ सर्जन, एडिनबुर्ग, स्कॉटलैंड से FRCS की डिग्री प्राप्त करने के बाद नार्मन ने फ्रांसिस कैम्पबेल पैनी से विवाह किया। फिर दोनों ने पश्चिमी यूरोप का दौरा किया जहाँ बेथयून ने प्रख्यात सर्जनों के काम को काफी करीबी से देखा।

1924 में बेथयून दंपति डेट्रॉइट, मिशिगन, अमरीका गए। वहां पर उसने अपनी डिस्पेंसरी शुरू की। डॉ. बेथयून के दवाखाने में अमीर लोग इलाज के लिए आते और ऊंची फीस देते। डॉ. बेथयून ने अपने मरीजों पर गरीबी के प्रभाव को बहुत करीबी से देखा। "हमें दान समाप्त करके लोगों को न्याय देना चाहिए," नार्मन ने कहा।

दो साल अपनी डिस्पेंसरी चलाने के बाद डॉ. बेथयून को टी.बी. की बीमारी हो गई जिसके लिए उन्हें न्यू-यॉर्क के एक सैनीटोरियम में जाकर रहना पड़ा। नौ महीने तकलीफ उठाने के बाद डॉ. बेथयून ने अपने बाएं फेफड़े पर एक ज़ोखिम भरे आपरेशन की अनुमति दी। उसके दो महीने बाद वो स्वस्थ हुए और उन्हें अस्पताल से छुट्टी मिली। इस अनुभव के बाद डॉ. बेथयून, न्यू-यॉर्क के एक टी.बी. अस्पताल में काम करने लगे। 1929 में उन्होंने रॉयल विक्टोरिया हॉस्पिटल, मॉंट्रियल, क्यूबैक में फेफड़ों की सर्जरी में विशेषता हासिल की। उन्होंने सर्जरी में नई तकनीकें और औज़ार इजाद किये। उन्होंने कई लेखों द्वारा अपने विचारों को दूसरों के साथ सांझा किया।

नीचे : डॉ. बेथयून (कैमरे के सामने) रॉयल विक्टोरिया हॉस्पिटल, मॉंट्रियल में सर्जरी करते हुए 1933.

1965 में सोवियत यूनियन यूनियन की यात्रा करने के बाद जब डॉ. बेथयून कनाडा वापिस लौटे तो उन्हें वहां पब्लिक हेल्थ की सख्त ज़रूरत महसूस हुई। तब वो कनाडा की कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बनें और उन्होंने लोगों की स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए **मॉंट्रियल ग्रुप** की स्थापना की। उसमें वो डॉक्टर शामिल हुए जिनका डॉ. बेथयून के विचारों में विश्वास था। “हम दवाओं को सबसे गरीब इंसान तक लेकर जायेंगे,” डॉ. बेथयून ने कहा।



ऊपर : डॉ. बेथयून कैनेडियन ब्लड बैंक के साथ 1937.

दाएं : स्पेनिश सिविल युद्ध में खून चढ़ाते हुए.



उसके बाद 17 जुलाई 1936 को स्पेन में गृह-युद्ध छिड़ गया। डॉ. बेथयून चाहते थे कि मिलिट्री, वहां के लोगों के हाथ से सत्ता नहीं छीनें। इसलिए उन्होंने अपनी नौकरी से इस्तीफ़ा दिया और स्पेन जाने के लिए जहाज़ पकड़ा। जब वहां उन्होंने सैनिकों से अस्पतालों को भरते हुए देखा तो उन्होंने एक योजना बनाई। एक गाँड़ी में उन्होंने सारे उपकरण फिट करके उससे **मोबाइल ब्लड बैंक** बनाया।

नीचे : डॉ. बेथयून द्वारा इजाद की गई पसलियाँ काटने की कैंची 1930.



इस मोबाइल ब्लड बैंक से वो घायल सैनिकों को जंग के मैदान पर खून उपलब्ध करवाते. बाद में डॉ. बेथयून ने लिखा, “स्पैन का ज़ख्म मेरे दिल में अभी भी ताज़ा है.” पर उनके प्रयासों से मृत्यु दर बहुत कम हुई.

उसके बाद कनाडा वापिस आकर उन्होंने पूरे देश में घूमकर भाषण दिए और स्पेनिश लोगों की लड़ाई के लिए धन इकट्ठा किया. उनका दौरा अभी खत्म भी नहीं हुआ था कि तभी जापान ने चीन पर आक्रमण किया. अपनी पत्नी फ्रांसिस को डॉ. बेथयून ने एक शत्रु में लिखा, “मैं इसलिए चीन जा रहा हूँ, क्योंकि शायद उन्हें मेरी सबसे सख्त ज़रूरत है. मुझे लगता है कि मैं वहां ज़रूर कुछ मदद कर पाऊंगा.” लोगों के चंदे की मदद से डॉ. बेथयून 2 जनवरी 1938 को चीन के लिए रवाना हुए. चीन की 8वीं बटालियन तक पहुँचने में उन्हें कुछ समय लगा. वहां मोबाइल ब्लड बैंक और मेडिकल सहायता का बिल्कुल अभाव था. इसलिए डॉ. बेथयून ने वहां मोबाइल मेडिकल सेवा उपलब्ध कराने की तैयारी की. वहां मेडिकल सेवा की बेहद ज़रूरत थी. युद्ध में ज़ख्मी हुए मरीजों के लिए न पलंग थे और न ही कम्बल. वहां खाने का भी अभाव था. “कनाडा को इन लोगों की मदद करनी चाहिए,” डॉ. बेथयून ने अपने घर लिखा.

चीन में डॉक्टरों का बहुत अभाव था, इसलिए डॉ. बेथयून ने बीस नए टीचिंग और नर्सिंग अस्पताल खोले जिससे कि नए मेडिकल स्टाफ को ट्रेनिंग दी जा सके. उनके मोबाइल यूनिट सेना के पीछे-पीछे चलते और ज़ख्मी सैनिकों का इलाज करते. वहां पर डॉ. बेथयून सर्जरी करते. एक बार डॉ. बेथयून पूरे 69 घंटों तक लगातार सर्जरी करते रहे. अक्सर वो खुद बीमार पड़ जाते. वो बहुत अकेलापन महसूस करते क्योंकि स्थानीय भाषा नहीं आने के कारण वो सिर्फ दुभाषिए से ही बात कर पाते थे. कभी-कभी वो बहुत निराश भी होते.



चीन में मेडिकल छात्र डॉ. बेथयून से ज़ख्मियों का कैसे इलाज किया जाए यह सीखते हुए.

युद्ध के मैदान में हमेशा दवाइयों की किल्लत रहती थी. कई बार घायल सैनिकों की जान बचाने के लिए डॉक्टर को खुद अपना खून मरीज़ को देना पड़ता था. डॉ. बेथयून रोजाना अमरीका और कनाडा में अपने मित्रों को लिखते और मदद की गुहार करते थे. पर उन्हें इतना ज़रूर पता था कि वहां उन्होंने अपनी जिन्दगी का सबसे कठिन काम किया था. “मैं अब थक गया हूँ,” उन्होंने लिखा, “पर मैं अपने काम से पूरी तरह संतुष्ट हूँ.”







डॉ. बेथयून ने 1939 में एक खंडहर बौद्ध मंदिर में सर्जरी की।

उसके बदले में चीनी लोगों ने डॉ. बेथयून को बहुत प्रेम दिया और उनका आभार व्यक्त किया। एक बार जब डॉ. बेथयून ने एक छोटे लड़के का ऑपरेशन करके उसकी जान बचाई तब उसके बाद लड़के के पिता ने ज़मीन पर माथा टेक कर डॉ. बेथयून का शुक्रिया अदा किया।

अक्टूबर 1939 में एक मरीज़ के पैर का नंगे हाथों से ऑपरेशन करते समय डॉ. बेथयून की ऊंगली कट गई। कुछ दिनों बाद एक अन्य मरीज़ के सर के ज़ख्म से वो ऊंगली दुबारा इन्फेक्ट हो गई। फिर धीरे-धीरे इन्फेक्शन का ज़हर डॉ. बेथयून के पूरे थके शरीर में फैल गया। इलाज के लिए उस समय दवाएं उपलब्ध नहीं थीं। 12 नवम्बर 1939 को एक किसान की झोपड़ी में खून में ज़हर फैलने से, डॉ. बेथयून का निधन हुआ।

चीन के जनरल माओ त्से तुंग, डॉ. बेथयून की निस्स्वार्थ सेवा से बहुत प्रसन्न थे। डॉ. बेथयून को चीनी लोग **बाई कुई-इन** कह कर बुलाते थे।

डॉ. बेथयून ने चीन के सैनिकों और आम लोगों को अपना खाना, कपड़ा, यहाँ तक कि अपना खून तक दिया था।

बाद में माओ त्से तुंग, पीपल्स रिपब्लिक ऑफ़ चाइना के चेयरमैन बने। उन्होंने एक निबंध लिखा, "नार्मन बेथयून की याद में।" उसमें उन्होंने लिखा, "हम सभी को उनकी निस्स्वार्थ भावना और साहस से सीखना चाहिए।" 1960 में माओ का यह निबंध चीन के लोगों के लिए पढ़ना अनिवार्य बना। डॉ. बेथयून के चित्रों पर पोस्टर और डाक-टिकट छपे। पूरे चीन में डॉ. बेथयून के पुतले लगाए गए।

बाद में कनाडा ने भी अपने इस समर्पित डॉक्टर का सम्मान किया। ऑटारियो में डॉ. नार्मन बेथयून कॉलेजिएट इंस्टिट्यूट और टोरंटो की यॉर्क यूनिवर्सिटी में बेथयून कॉलेज के नाम उनके सम्मान में रखे गए।

ग्रेनहर्स्ट के जिस घर में वो जन्मे वो अब बेथयून मेमोरियल हाउस और एक राष्ट्रीय स्मारक बना। डॉ. बेथयून के जीवन पर दो फ़िल्में भी बन चुकी हैं।

डॉ. नार्मन बेथयून एक महान मानवतावादी थे जिन्होंने सारी जिन्दगी लोगों की सेवा की और वहाँ काम किया जहाँ उनकी सबसे ज्यादा ज़रूरत थी। उन्होंने युद्ध में स्वास्थ्य सेवा का चित्र बदला। आज उनकी गिनती कनाडा के एक महान हीरो के रूप में होती है।



पूरे चीन में जगह-जगह इस प्रकार के डॉ. नार्मन बेथयून के पुतले बने।



















































































